साहित्य और साहित्येतर
गोपाल प्रधान

साहित्य और साहित्येतर

गोपाल प्रधान

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: जनवरी, 2025

© गोपाल प्रधान

भूमिका

साहित्य को कभी साहित्येतर से अलग नहीं किया जा सकता। निरर्थक ध्वनियां भी मानव कंठ से ही निकलती हैं और उन्हें सुनने वाला उनमें लय को पहचान कर ही उन्हें सुनता है। शुद्ध कल्पना से रचित दुनिया में भी इस दुनिया की छाया होती है। इस दुनिया में मानव समाज के अतिरिक्त उसके आस पास का वातावरण होता है जिसके साथ वह हजार तरीकों से जुड़ा होता है। इस वातावरण के साथ भी उसकी संवेदना जुड़ी होती है।

साहित्य का माध्यम भाषा होती है जिसका निर्माण मानव समाज और उसके वातावरण की अंत:क्रिया से होता है। ऐसी स्थिति में साहित्य पर जब भी विचार होगा तो उसके साथ साहित्येतर का आ जाना स्वाभाविक है। साहित्य भी समूचे समाज का ही अंग होता है। उसका रचयिता सामाजिक प्राणी होने के नाते विभिन्न संबंधों से जुड़ा होता है । इसके अतिरिक्त उसके विकास की कोई न कोई ऐतिहासिक प्रक्रिया होती है जिसके निशान उसके लिखे में खूब अच्छी तरह पहचाने जा सकते हैं। जिस भी भाषा में वह सोचे और लिखेगा उसकी भी निश्चित विकास प्रक्रिया होती है। इसे बरतने के दौरान ही लेखक को बहुत लम्बी परम्परा का पता चलता है जिसने उसके जन्म से पहले ही शब्दों के अर्थ तय कर दिये होते हैं। बालक के रूप में शब्दों के अर्थ को ग्रहण करने की उसकी कोशिश बहुधा

अनजाने होती है। समझ आ जाने के बाद अर्थग्रहण की यह प्रक्रिया सचेत तो हो जाती है लेकिन उसके रूपों की सीमा भी होती है। इसे किसी भी तरह अकेले में संपन्न नहीं किया जा सकता। समझ की बढ़ोत्तरी भी कभी अकेले नहीं होती। व्यक्ति के आसपास का समूचा समुदाय इसमें उसकी मदद करता है। इसी सामूहिकता के चलते व्यक्ति अपने सामाजिक इतिहास से जुड़ता है।

व्यक्ति के मस्तिष्क में समूचे संसार को प्रतिबिम्बित करने की क्षमता होती है लेकिन इसका परिष्कार धीरे धीरे होता है। इस क्रम में उसकी समझ का विस्तार होता है। उसमें अत्यधिक प्रत्यक्ष से लेकर अतिशय अमूर्त तक को ग्रहण करने की भयंकर ललक होती है। इस ललक को संतुष्ट करने में वह देश से लेकर विदेश तक की खाक छानता है। इस काम में उसे अन्य लोगों के प्रति सम्मान के साथ क्रोध और ईर्ष्या भी होती है।

संसार को महासागर कहा गया है जिसे तैरकर पार करना होता है। इस विकट प्रयास में तमाम अन्य लोग भी लगे रहते हैं। व्यक्ति को कभी उनका साथ मिलता है और कभी उनका असहयोग भी झेलना होता है। इन सब यादों की पूरी पोटली तो चाहकर भी कभी नहीं खोली जा सकती लेकिन उसके कुछ टुकड़े अनचाहे भी इधर उधर बिखरते रहते हैं। सुसंगति के तमाम दावों के बावजूद यह बिखराव बना रहता है। इस बिखराव के रास्ते गैर जरूरी भी सामने आता रहता है। अगर उसकी मौजूदगी न हो तो जीवन यंत्रवत हो जाने की शंका होने लगती है। इनके रास्ते ही

बारिश के छींटे और धूप आपकी सुरक्षा छतरी के भीतर घुसते हैं। हमेशा छाया में जीने की आदत बहुत अच्छी नहीं होती।

साहित्य के प्रसंग में पुरखों को याद करना जरूरी होता है क्योंकि वे हमारे लिए बहुत आसानी पैदा कर जाते हैं। उनको याद करने का मतलब उनके समय को याद करना होता है। जिस तरह बाजार से गुजरते समय सब कुछ जेब में भर नहीं लेते उसी तरह विगत से भी वही ग्रहण करते हैं जिसकी जरूरत वर्तमान के लिए होती है। कभी कभी युवा भी पुरखों की आवाज में बोलते सुनाई देते हैं। असल में किसी का वर्तमान ऐसा नहीं होता जिसमें प्राप्त से ही संतुष्टि हो जाये। किसी न किसी कारणवश मनुष्य लगातार अप्राप्त को पाने की कोशिश करता रहता है। उसकी इस कोशिश में बहुतेरे लोग अनजाने मददगार हो जाते हैं। ऐसे में किसी को भी पूरा कर्ज उतारने की शक्ति का गुमान नहीं पालना चाहिए। इसी अक्षमता से उपजे ये लेख समय समय पर मित्रों के दबाव पर लिखे गये। इससे कुछ रास्ते फूट सकते हैं और रास्ते के सीधा होने की आशा व्यर्थ होती है। विस्तृत राजपथ तो एकदम सीधा हो सकता है लेकिन पगडंडी टेढ़े मेढ़े ही चलाती है। शुरू से ही लम्बी दूरी के लिए पगडंडी पकड़ता रहा। अब उस नियम को तोड़ना उचित नहीं लगता। सड़क से जाने में रास्ता लम्बा लगता था इसलिए मुख्य सड़क से अलग छोटी राह पकड़कर चलना पसंद रहा है।

विचित्र के प्रति आरम्भ से ही आकर्षण रहा है। प्रत्येक व्यक्ति भिन्न होता ही है। इसी नियम के अनुसार इस संग्रह के भी विचित्र और भिन्न होने को लेकर आश्वस्त हूं। अगर किसी को रुचिकर लगा तो सौभाग्य। विनम्र अपील है कि इसे बहुत उम्मीद से न देखा जाये।

विषय सूची

साहित्य 8

हिंदी का दलित साहित्य: वर्तमान चुनौती और भविष्यगत सम्भावना 9

प्रेमचंद के समय से संवाद 14

विभाजन की औपन्यासिक दास्तान 30

तमस: भीष्म साहनी की सर्वोत्तम उपलब्धि 46

निष्कवच ज्ञानरंजन 55

कामायनी का दर्शन और भविष्य दृष्टि 64

अनुवाद से परिचय 80

प्रेम का प्राणलेवा आकर्षण 97

निराला का कथाकार 102

और 121

धैर्य और साहस ही विजय बहादुर राय का धन था 122

वर्मा जी की छोटी सी याद 127

मेरे अध्यापक और साथी मैनेजर पांडे 131

मीना राय का विश्वविद्यालय 142

एजाज़ अहमद की यादें 145

प्यारे लीलवान की कहानी 152

साहित्येतर 157

चीन और अफीम के बारे में अमिताभ घोष 158

कोरोना के दूरगामी प्रभाव 172

शीतयुद्ध की वापसी 182
हमारा समय और उसकी चुनौतियां 190
मूलवासी और उपनिवेशवाद 209
पिकेटी का हालिया चिंतन और समाजवाद का सपना 216
धरती की अंतरनिर्भरता 231
रक्तनदी की यात्रा 239
कला में प्रतिरोध 245